विषयानुक्रमणिका

भूमिका..**i-iv**

पहला अध्याय: साहित्य और यथार्थ का अंतर्संबंध..................................**1-21**

1. 1: 'यथार्थ' का आशय

1. 2: साहित्य और यथार्थ का अंतर्संबंध

दूसरा अध्याय: मणिपुर का संक्षिप्त परिचय..**22-56**

2. 1: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2. 2: सामाजिक- सांस्कृतिक स्थिति

2. 3: मणिपुर का वर्तमान

तीसरा अध्याय :'उत्तर पूर्व' उपन्यास का यथार्थबोध..............................**57-88**

3. 1: सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश

3. 2: विश्वविद्यालय की परिस्थितियाँ

3. 3: बाहरी हस्तक्षेप

3. 4: आंतरिक चुनौतीयां

चौथा अध्याय: शिल्पगत वैशिष्ट्य **89-106**

4. 1: भाषिक बनावट

4. 2: शैलीगत विशेषताएँ

उपसंहार..**107-109**

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची..**110-112**

भूमिका

भारत अपने आप में एक भिन्नताओं भरा देश है। इस देश का हर प्रदेश, हर राज्य अपने आप में अलग है। भारत के वासी अपने उत्तरी प्रदेशों या राज्यों के बारे में भरपूर जानकारियाँ रखते हैं। उत्तरी राज्यों अथवा मैदानी प्रदेशों की राजनीति और नेता ही पूरे देश का भविष्य तय करते हैं, परंतु भारत के यही लोग अपने ही देश के पूर्वोत्तर में बसे राज्यों से अनभिज्ञ हैं। पूर्वोत्तर के राज्यों को हमेशा से देश के बाकी क्षेत्रों से अलग रखा गया। यहाँ के लोगों, इनकी जनजातियों, भाषा, खान-पान, पहनावे आदि के बारे में दूसरे प्रदेश के भारतवासी नहीं जानते हैं और न ही जानना चाहते हैं। अगर पूर्वोत्तर भारत का कोई व्यक्ति दूसरे शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई आदि जगहों पर जाता है तो उनके साथ परायों जैसा व्यवहार किया जाता है, इनको विदेशी समझा जाता है और इनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। इनके कपड़ों और शारीरिक बनावट को देखकर इनको चिढ़ाया जाता है, कई नाम दिए जाते हैं, मारा-पीटा जाता है। अपने ही देश में जिसके साथ ऐसा अजनबियों जैसा व्यवहार किया जा रहा हो, तो ऐसे में पूर्वोत्तर भारत के लोगों में असुरक्षा की भावना बढ़ना जायज है। पूर्वोत्तर के राज्यों में "सेवेन सिस्टर स्टेट" असम, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश जाने जाते हैं। इन प्रदेशों के लोग "मेन स्ट्रीम" (मुख्यधारा) कहे जाने वाले भारत से हमेशा ही कटे रहते हैं। यहाँ न विकास हुआ है और न ही यहाँ के लोगों को विकास का हिस्सा ही बनाया गया है। यहाँ के लोग हमेशा से उपेक्षित रहे हैं। जब अपने ही देश का एक हिस्सा गुमनामी का दंश झेल रहा है तो उस हिस्से के बारे में जिज्ञासा का होना सामान्य-सी बात है।

पूर्वोत्तर के लोगों के सुख-दुख, वहाँ के स्थानों, त्योहारों आदि को शेष भारत में जहाँ स्थान नहीं मिला है, वहीं हिंदी साहित्य में भी इनको प्रवेश नहीं मिला है।

जब मेरे लघु शोध प्रबंध के विषय को लेकर मेरे शिक्षकों से मेरी बातचीत चल रही थी तो सर्वप्रथम पूर्वोत्तर भारत की तरफ मेरा ध्यान हमारे कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे सर ने दिलाया। उन्होने मेरा परिचय 'उत्तर पूर्व' उपन्यास से कराया। इस उपन्यास को लेकर मैंने अपने शोध निर्देशक डॉ.

सुनील कुमार सर से भी बात की तो उन्होने मेरे असमंजस को दूर करते हुए मुझे कई सुझाव दिए। पूर्वोत्तर भारत की इस दशा को देखकर ही मेरी रुचि पूर्वोत्तर भारत के प्रदेशों में बढ़ने लगी। इसी बीच मुझे ईटानगर की यात्रा करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ, जिससे मुझे पूर्वोत्तर भारत को करीब से देखने और समझने का अवसर मिला। इस यात्रा के पश्चात पूर्वोत्तर क्षेत्र पर शोध करने का मेरा निर्णय और दृढ़ हो गया। पूर्वोत्तर के प्रदेशों में से मणिपुर राज्य पर आधारित 'उत्तर पूर्व' उपन्यास को पढ़ने के उपरांत अंतत: इसे ही मैंने अपने लघु शोध प्रबंध का आधार ग्रंथ चुना। इस प्रकार *'उत्तर पूर्व'उपन्यास का यथार्थबोध* मेरे शोध का विषय बना। यह विषय सर्वथा नवीन और मौलिक है और मेरी जानकारी में इस विषय पर कहीं पर भी शोध कार्य नहीं हुआ है।

पूरे शोध अध्ययन में यथार्थवादी अध्ययन प्रविधि को अपनाया गया है। अध्ययन की सुविधा और शोध कार्य की आवश्यकता के अनुसार इस लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत *'साहित्य और यथार्थ के अंर्तसंबंध'* को रखा गया है। इसको दो उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय में "यथार्थ" का आशय स्पष्ट किया गया है। द्वितीय उप अध्याय में साहित्य और यथार्थ के अंर्तसंबंध को बताया गया है। आज के साहित्य की उपयोगिता को यथार्थ की भूमि पर कसा जाता है। इसमें साहित्य में यथार्थ की प्रवृत्ति के उपयोग के बारे में समझने की कोशिश की गई है। यथार्थ साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों में से एक है।

द्वितीय अध्याय में मणिपुर राज्य के विभिन्न पहलुओं को जानने का प्रयास किया गया है। इसलिए इसके अंतर्गत मणिपुर के संक्षिप्त परिचय को रखा गया है। पहले उप अध्याय में मणिपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानने का प्रयास किया गया है। मणिपुर में राजाओं एवं राज-परिवारों का एक अपना इतिहास रहा है। यहाँ राजसत्ता को लेकर काफी गृहयुद्ध हुए हैं। इस उप अध्याय में मणिपुर के नामकरण से लेकर, उसके राजाओं के इतिहास को जानने की कोशिश की गई है, दूसरे उप अध्याय में मणिपुर की खूबसूरत संस्कृति के विभिन्न रंगों को समझने का प्रयास किया गया है। मणिपुर के जनजातीय समाज, वहाँ का रास नृत्य, वहाँ

के लोगों के खान-पान, वेशभूषा आदि का अध्ययन इस उप अध्याय में किया गया है। तीसरे उप अध्याय में मणिपुर के संघर्षरत वर्तमान को स्पष्ट करने का प्रयास हुआ है। मणिपुर का वर्तमान किन समस्यायों को झेल रहा है, किन कठिनाइयों का सामना कर रहा यह सब 'उत्तर पूर्व' उपन्यास में किस प्रकार चित्रित हुआ है, यही जानना इस अध्याय का ध्येय हैं।

इस लघु शोध प्रबंध का तीसरा अध्याय *"उत्तर पूर्व उपन्यास का यथार्थ बोध"* है। इस अध्याय में 'उत्तर पूर्व' उपन्यास को समग्र रूप से जानने का यथासंभव प्रयास किया गया है। यह अध्याय पूर्णत: 'उत्तर पूर्व उपन्यास' पर ही केंद्रित है। इस अध्याय को चार उप अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप अध्याय में उपन्यास में वर्णित मणिपुर के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को समझने की कोशिश की गई है। उपन्यास में कई प्रकार की परिस्थितियाँ हैं, जैसे उपन्यास में वर्णित विश्वविद्यालय के कैम्पस के जीवन और उससे जुड़ी परिस्थितियों का अध्ययन दूसरे उप अध्याय में किया गया है। आगे तीसरे और चौथे उप अध्यायों में उपन्यास में वर्णित मणिपुर एवं विश्वविद्यालय किन बाहरी हस्तक्षेपों का शिकार हो रहे है और साथ ही उन्हें किन आंतरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, इन सभी प्रश्नों का उत्तर इन उप अध्यायों में ढूंढने का प्रयास किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध का चौथा और अंतिम अध्याय शिल्पगत वैशिष्ट्य का है। इस अध्याय में चयनित उपन्यास की भाषिक बनावट और उसकी शैलीगत विशेषताओं को जानने की कोशिश की गई है। अंत में उपसंहार के अंतर्गत इस शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध को अंतिम रूप तक पहुँचाने में अनेक लोगों का योगदान रहा है। अपने आस-पास के लोगों की सहायता एवं सहयोग की वजह से ही हम अपने जीवन के कार्यो को पूरा कर पाते हैं। इस लघु शोध प्रबंध के पूर्ण होने में मेरे गुरुजनों, परिजनों, मित्रों के द्वारा दिए गए सहयोग, प्रेरणा एवं योगदान को मैं कभी भी भुला नहीं सकती।

मेरे इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण कराने में कई लोगों की सहायता मिलती रही, जिसमें सर्वप्रथम हमारे कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे हैं, जिन्होंने विषय चयन जैसी जटिल समस्या का समाधान करने में मेरी सहायता की। आगे हमारे शोध निर्देशक डॉ. सुनील कुमार के सहयोग और उनके महत्वपूर्ण सुझावों का विशिष्ट योगदान है। मेरी गलतियों को सुधारने का धैर्य रखने के लिए मैं इनका आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे सही मार्गदर्शन देने और मेरे विषय के प्रति मेरी समझ एवं रुचि को विकसित करने में इनकी बहुत बड़ी भूमिका रही है।

इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे मित्रों ने भी मेरी बराबर सहायता की। इन्होंने हर समय मेरी समस्यायों को अपना समझ कर उसका यथासंभव हल निकालने का प्रयास किया। विशेषरूप से मैं काजल कुमारी सिंह, मयंक, मनोज रजक, आराधना साव की आभारी हूँ। मेरे इस शोध कार्य को पूरा करने में मैंने जितनी मेहनत की है, मेरे परिवार ने मेरे पीछे इससे दुगनी मेहनत की है। मैं अपने पिताजी श्री रमेश मणि त्रिपाठी और माताजी श्रीमती दुर्गा मणि त्रिपाठी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके कठिन परिश्रम और आशीर्वाद से मैं यहाँ तक पहुँच पाई हूँ। साथ ही मैं अपने दादा-दादी, भाई बालेंदु शेखर मणि त्रिपाठी और छोटी बहन श्वेता मणि त्रिपाठी के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया और प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से शोध कार्य पूर्ण करने में मेरी सहायता की। इनके अलावा हमारे कोलकाता केंद्र के कर्मचरियों श्री बिजेंद्र सिंह, श्री सुकेन शिकारी और रीता दीदी का भी आभार व्यक्त करती हूँ। मणिपुर प्रदेश से मेरा परिचय कराने के लिए मैं अबुजाम प्रदीप सिंह और ख्वाइराकपम रंजीत सिंह को भी धन्यवाद देना चाहूंगी। मैं अपने इस लघु शोध प्रबंध को अपने शोध निर्देशक डॉ. सुनील कुमार को और अपने परिजनों को समर्पित करती हूँ।

दिनांक : 23.01.2018 **मदालसा मणि त्रिपाठी**

स्थान : क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

महात्मागांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा